DEPARTMENT OF MAITHILI

D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY MD MUNNA
(GUEST TEACHER)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA (BIHAR)

Date : 03 April - 04 April, 2020

पृथ्वीपुत्रक आधार पर सरूपाक चरित्र–चित्रण

''पृथ्वी पुत्र'' आधुनिक मैथिली साहित्यक एक गोट आंचलिक उपन्यास थीक जकर प्रणेता छथि 'श्री ललित जी' उपन्यासकार श्री ललित एहि उपन्यासक प्रमुख पात्र सरूपाक मध्यमे ऐहि प्रगतिवादी युगमे दलित ओ निम्नवर्गीय मजूदरक नव जागरणक एक गोट नव अध्याय प्रस्तुत कएलैन्ह अछि।

सरूपा विसेखीक पुत्र आ बिजली ओ गेनवाक छोर भाय अछि। यद्यपि सरूपा कमे वयसक युबक मजदूर अछि तथापि एकरामे अदम्य साहस छैक आ अन्यायक प्रति विद्रोहक भावना सेहो। आ तें जखन ओकर बाप बिसेखी एस0पी0 साहेबक लग ठाढ़ भए जन समूहक मध्य आब चोरी नहि करबाक शपथ खएबाक हेतु ठाढ़ होइत अछि आ किछु करणवश ओ किछु बाजि नहि सकैत अछि तँ लगमे बैसल सरूपाक मोन मे कोना उत्पन्न होइछ आ अपन सहानुभूति आ विद्रोहपूर्ण नजरियासँ बाप दिस देखय लगैछ। फलस्वरूप बिसेखी आत्माकें साक्षी राखि शपथ खाइत अछि। सरूपाक अनादरक प्रति अन्तर्द्वन्द एहु घटना सँ परिलक्षित होइत अछि।

सरूपा मे भावुकताक कारणें बिजलीक प्रति सहज स्नेह छैक। आ तै जखन बिजलीकें सासुर लए जएवाक हेतु ओकर पति हीरालाल आवैत अछि आ बिजली जएवासँ अस्वीकार कऽ दैछ, तखन हीरालाल आवेशमे आवैत बिजलीक जुट्टी पकड़ खिचैत अछि, गेनवा अवेशमे पड़लरहि जाइत अछि, परंच सरूपा–''हीरा लालक पातर गट्टा अईठ पीठपर उनटा देलकैक। बिजली उठलि ठाढ़िभेल आ भाइक बलिष्ठ पंचा सँ अईठल बैहिवला स्वामी कें देखि नहुएँ बाजल–तोड़िदे कोढ़ियाक गट्टा, उनटा दे एकर बाँहि।''

एहि तरहें हम देखैत छी जे सरूपा आ बिजली परस्पर स्नेहानुक्त अछि। एहि दुनूक परस्पर स्नेह चरम उत्कर्ष कें देखि गेना लालक विधवा पत्नी वेणीक उक्ति कतेक स्पष्ट अछि द्रष्टव्य थिक–''ई भाई–बहिनी एके शोणतक दूटा ठोप थिक, एके जारनिसँ छूटल दूटा खुहरी थिक जे अलग नइ कएल जा सकइए।''

सरूपा कर्मठ आ उद्यमी सेहो अछि। कोनहु काजकें करबामे ओ कर्मवीरक लक्षण के प्रदर्शित करैत अछि। चाहे ओ पटुआ काटबाक, गोड़बाक, छोड़एबाक वा खेत जोतबाक काज किएक ने हो सरूपा अत्याधिक उत्साहक संग करैत अछि। आ तें जखन परिश्रमक फल प्राप्ति में ओकरा कनेको बाधाक आभाष भेटैत अछि तें ओ अपन अधिकारक लेल प्राणर्पण क दैछ। इएह कारण छल जे ओ जंग बहादुर सन नौ सए बीघाक मालिक जमीन्दार सँ लोहा लेबाक लेल एकसो तैयार भ जाइछ।

यद्यपि सरूपा कर्मठ अछि, उद्यमी अछि आ तदनुकुल ओकर शरीरिक गठन सेहो तथापि ओकरामे अहंकारक भावना नहि छलैक। ओकरामे साहस एकटा तेहने विशेषता छैक जकर बले ओ समस्त मजदूर आ भूमिहीन दलित वर्गक नेतृत्व करवामे सफलताक चरम सीढ़ी धरि पहुँचि सकैत अछि। कारण जखन सरकारी आदेशानुसार सभ भूमिहार मजदूर कें जमीदारक जमीन में सँ थोड़ बहुत जमीन भेटलैक आ तैयो जमीन्दारक कोषक कारणें के ओ ओकरा अपना अधिकार क्षेत्रमें नहि आनि सकल तखन सरूपाक प्रगतिवादी भावना ओकरा एहि दिस पएर बढ़एबाक लेक प्रेरित कएलकैक आओ अपन मकई काटि आनलक, मालिक (जमीन्दार) कें बाँटि क नहि देलकैक।

यद्यपि सरूपाक बाप बिसेखी मरि चुकल छैक आ ओकर भाषा गेनालाल एहि छओ–पाँच सँ कोसो दूर रहैत अछि तथापि जखन जमीन मालिक के सुपुर्द करवाक उदेश्यसँ दुसधटोलीमे पंचैती बैसाओल गेल तखन सरूपा अन्यान्य शहरक परिभ्रमण आ नेता सभक भाषणक अनुशीलनक बलें पंचैतीमे बैसल छोट आ पैघ सभकें अपन अनुभवधन्य भाषणक माध्यमे नव–जागरण मार्ग दखौलक। एकर भाषण ततेक कारगर भेल जे प्रायः सभ एकरहि स्वर में स्वर मिलवैत बाजि उठल जे ''हमर सभ मालिक कें जमीन सुपुर्दी नहि करवैक।'' आ तदनुकूल सरूपाक नेतृत्वमे जमीन्दारक हँसेरीक सामना सभकें कर परलैक।

ओहि हँसेरीमे सरूपा कें घायल देखि आ गेनालालक भाया सँ जीर्ण–शीर्ण शरीर सँ प्रभावित होइत रक्त कें देखि जेना सभक आँखि रक्ताभ भऽ गेल हो आ एहि घटनाक बाद सभ मजदूर वर्ग मे एकताक विलक्षण समन्वय सरूपा कएलक जाहि जनशक्तिक आगू शोषक वर्गके (जमीन्दार आ पूँजीवादी लोककें) मुहकी खाए पड़लैक। सरूपा एहि प्रकारक अदम्य साहस वस्तुतः सराहनीय अछि आ एकारमे आक्षरिकता रहितो जेना कतेकेरास सरूपा सन चरित्र हमरा सभहुक समाजये देखना जाइछ मुदा चिनगारीक अभावमे सूखल जारनिक सदृश बनल पड़ल अछि।

सरूपा प्रगतिवादी युगक प्रहरीक रूपमे अवतरित भेलअछि मुदा विघ्न–बाधा एकटा जीवनमे सदैत दीवार बनिक ठाढ़ रहैछ, कारण प्रारम्महिमे एकर बाप बिसेखी एक सिपाहीक हत्याक आरोप मे जेल चलि गेलैक आ ओतहि दिवंगत सेहो भए गेलैक। तकर एक वर्षक बाद एकर एकमात्र भाए गेनालाल हँसेरीमे सरूपाकें बचावऽ क लेल अपन प्राणक आहुति दए देलकैक आ तें आब सरूपा एक विधवा माए, विधवा माउध वेणी आ एकमात्र बहिन बिजली क संग एकसरे रहि गेल अछि। पहिने तँ ई उद्दंड छल, किन्तु आब एकरो अपन उत्दायित्वक ज्ञान भेलैक या घरक मालिक बनि सभक भरण–पोषण मे लागि गेल। अन्ततोगत्वा गेनालालक विधवा पत्नीवेणीक खिन्ननावस्था उन्मुख स्थितिकें देखि ओकरा सँ विवाह क लैछ आ एक सीमित परिवार मे सुखमय जीवनक निर्वाहमे जुटि जाइत अछि।

एहि तरहे हम देखैत छी जे श्री ललित जी सरूपा सन चरित्रक निर्माण कए दलित ओ शोषितक जर्जर जीवनमे नव उत्साह आनवाक प्रयास कएलैन्ह अछि। वस्तुतः आई निम्नवर्गीय सभ मे सरूपा सन चरित्रक बड़ आवश्यकता अछि। आ तखने निम्नवर्गीय लोकक उत्थान भ सकैत अछि आ से होएब बड़ जरूरी अछि।

MD MUNNA
Guest Teacher
Department of Maithili
Mob - 9931488030